स्नातक प्रथम खण्ड
मैथिली (अनुषंगिक)
second Lecture

डा० राज कुमार राय
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
बि० बि० जनता महाविद्यालय
राजनगर

अलंकार भेद

अलंकार सामान्यतया तीन प्रकारक मानल गेल अछि :-

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार एवं
3. उभयालंकार

शब्दाश्रित अलंकार, अर्थाश्रित अलंकार अर्थालंकार एवं जत दुनु प्रकारक अलंकार रहैत अछि तकरा शब्दार्थालंकार या उभयालंकार कहल जाइत अछि।

अलंकारक किछु प्रमुख भेद

1. **श्लेष** :- जतय श्लिष्ट शब्दसँ अनेक अर्थक कथन रहैत अछि तत श्लेष अलंकार होइछ। 'श्लिष्ट' श्लिष धातुसँ निष्पन्न विशेषण अछि एवं एकर अर्थ होइत अछि 'मिलल', 'सटल' आदि।

Scanned with CamScanner

अतः श्लिष्ट शब्दक अर्थ भेल ओहन शब्द जाहिसँ अनेक अर्थ स्पष्ट रहय। ई दुई प्रकारक होइत अछि -

1. सभङ्ग श्लेष   2. अभङ्ग श्लेष।

जाहि शब्द (पद) कें तोड़ि एकाधिक अर्थ बहार कयल जाइत अछि सभङ्गश्लेष कहबैछ तथा जखन शब्दकें बिनु तोड़नहि अनेक अर्थ बहार क लेल जाइछ तँ ओहन शब्द अभंगश्लेष कहबैछ।

उदाहरण

1. मन मोहन सखि आयल अछि ऋतुराज।
निशिवासर कल पाओत भनत न काज॥
2. जनिक जनक कश्यप स्वयं लोकवेद में ख्यात।
रवि थाके सेवथि वारुणी तँ की अद्भुत बात॥

प्रथम उदाहरण मे मोहन शब्दक भङ्ग मोह न एवं मोहन मे श्लेष अछि। दोसर उदाहरण मे कश्यपक अर्थ कश्यप ऋषि एवं ताड़ी-दारु सेवनिहार तथा वारुणिक अर्थ पश्चिम दिशा एवं मद्य दुहू अछि तथा दुहूसँ अर्थ बहराइत अछि।

2. **यमक** :- यमकक अर्थ होइत अछि 'द्व'।
अतः एहि अलंकारमे एक वर्ण समुदाक कमसँ कम दुइ बेर श्रवण होयत आवश्यक अछि। ओना सार्थक रहितहुँ भिन्न अर्थ रहलाहिर स्वर-व्यंजन समूहक क्रमशः आवृत्तिकेँ यमक अलंकार कहल जाइछ।

उदाहरण

बह मन्द सुरभि शीतल समीर।
बह सरिता दुइ दिश विमल नीर॥

एत प्रथम एवं द्वितीय दुनु पंक्तिमे बह शब्दक प्रयोग भेल अछि किन्तु दुनु भिन्न अर्थक अछि। पहिल 'बह' स्पन्दन एवं दोसर 'बह' गमनक प्रतीक अछि तेँ एत यमक अलंकार भेल।

continue to next Lecture

Reference book — मैथिली काव्यशास्त्र - डा० दिनेश झा जी